International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

तिलक के स्वराज की अवधारणा और आधुनिक राजनीतिक परिदृश्यमें इसकी प्रासंगिकता का विश्लेषण

प्रो. विनीता पाठक[1], आशीष कुमार मिश्रा[2]

[1]आचार्या, राजनीति विज्ञान विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर
[2]शोध छात्र, राजनीति विज्ञान विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर

शोधसारांश

बाल गंगाधर तिलक की स्वराज की अवधारणा भारत के स्वतंत्रता संग्राम की आधारशिला थी और व्यापक रूप से भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के साथ गहराई से जुड़ी हुई थी। तिलक ने स्वराज को केवल राजनीतिक स्वतंत्रता के रूप में नहीं बल्कि भारतीय मूल्य संस्कृतिऔर परंपराओं में निहित स्वशासन के रूप में परिभाषित किया। उनका मानना था कि सच्ची स्वतंत्रता में आर्थिक, सामाजिक और आध्यात्मिक स्वायत्त सम्मिलित है, जो की जमीनी स्तर पर सशक्तिकरण की आवश्यकता पर बलदेती है। तिलक की दृष्टि जनता की सक्रिय भागीदारी की वकालत करतीथी, जिसका लक्ष्य शासन की विकेंद्रीकृत प्रणाली बनाना था। आधुनिक राजनीतिक परिदृश्यमें तिलक के स्वराज का विचार अत्यधिक प्रासंगिक बना हुआहै,विशेष रूप से विकेंद्रीकरण की मांग और स्थानीय शासन के लिए के संदर्भ में।वर्तमान में दुनिया भर मेंलोकतांत्रिकव्यवस्थाएं सत्ता के केंद्रीकरण और नागरिकों के बीच मोहभंग से जूझ रही है। तिलक की अवधारणा स्थानीय निकायों को सशक्त बनाने नागरिक भागीदारी को बढ़ावा देने और जवाबदेहीको बढ़ावा देने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करती है। इसके अतिरिक्त स्वराज में निहित आत्मनिर्भरता और सांस्कृतिक गौरव के सिद्धांत समकालीन आंदोलन से मेल खाते हैं, जो की स्वदेशी अधिकारों, सतत विकास, पर्यावरणीय मूल्य व सांस्कृतिक संरक्षण पर जोर देते हैं। इस प्रकार यहशोध पत्र तिलक के विचारों पर दोबारा गौर करने से शासन,सांस्कृतिकपहचान,विकेंद्रीकरण व पर्यावरण समस्याओं से संबंधित आधुनिक चुनौतियों का समाधान करने में अंतर्दृष्टि प्रदान करेगा।

संकेत शब्द– स्वराज, स्वतंत्रता, सशक्तिकरण, भारतीय राष्ट्रवाद, विकेंद्रीकरण, नागरिक भागीदारी, आत्मनिर्भरता।

प्रस्तावना

बाल गंगाधर तिलक,जो लोकमान्यतिलक के नाम से सुविख्यात है,एक महानतम राष्ट्र निर्माता एवंस्वाधीनतासेनानी थे। श्री अरविंदो ने उन्हें 'राष्ट्रीय साधनाका अवतार' कहा। उनकी महानता उनकी वास्तविक उपलब्धियां में नहीं, किंतु उसमें है जो उन्होंने संभव बनाया।तिलक आधुनिक भारत के महानतम कर्मयोगियों में से एक हैं। वैदिक व दार्शनिक शोध के रूप में चिरस्थाई रचनाओं के द्वारा उन्होंने भारत के साहित्यिक तथा संस्कृति के इतिहास में अपूर्व यश प्राप्त कर ली थीं। तिलक भारत के राजनीतिक इतिहास में ही नहीं बल्कि इस देश की पुनर्जागरण के इतिहास में भी एक महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। वह एक राष्ट्रवादी सेनानी थे। उनका राष्ट्रवाद स्वामी विवेकानंद की तरह पुनरुत्थानवादी थां। वह मानते थे, कि भारत एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में संगठित हो।

तिलक के स्वराज की अवधारणा

तिलक के लिए स्वराज केवल ब्रिटिश शासन से मुक्ति नहीं था, बल्कि यह आत्मनिर्भरता, भारतीय संस्कृति की पुनर्स्थापना और भारतीय जनमानस की जागरूकता का भी प्रतीक था। उनका मानना था कि '**स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार**' है। और इसका मतलब था कि भारतीयों को खुद अपने देश की सरकार बनाने का हक है।

मांडलेजेल से बाहर आने पर तिलक ने स्वराज की मांग को प्रभावी बनाने के उद्देश्य से होम रूल लीग की स्थापना की। सन 1906 में कोलकाता में हुएकांग्रेस अधिवेशन में दादा भाई नौरोजी ने अपनेअध्यक्षीय भाषण में स्वराज की मांग की। परंतु तिलक की धारणा का स्वराज दादा भाई नौरोजी वअन्य उदारवादियों की परिकल्पना के स्वराज से बहुत भिन्न था। स्वराज से तिलक का तात्पर्य था, जनता को सत्ताका तुरंत हस्तांतरण करना जबकि उदारवादी ऐसे छोटे छोटे सुधारो से संतुष्ट हो जाते जैसे विधान मंडलों का विस्तार एवं उनमें निर्वाचित भारतीयों की संख्या में वृद्धि इत्यादि।दूसरेतिलक ने स्वराज की मांग को एक ऊंचे नैतिक स्तर पर रखा। उनके लिए स्वराज एक राजनीतिक आवश्यकता नहीं, अपितु एक नैतिक अनिवार्यता था।यह मनुष्य के नैतिक स्वभाव कीएकअदम्य मांग थी, अतः एक संपूर्ण सामाजिक व्यवस्था का आधार था। तिलक ने स्वराज की मांग को धर्म की राष्ट्रीय परंपरा के साथ संयुक्त कर दिया था। उनके लिए स्वराज राष्ट्र का जन्म सिद्ध अधिकार था। उदारवादी नेताओं के साथ तिलक का मतभेद केवल स्वराज के स्वरूप के विषय

में नहीं,अपितु उसे प्राप्त करने के साधनों के संबंध में भी था। जबकि उदारवादी प्रार्थना याचिका व विरोध प्रदर्शनश जैसेसंवैधानिक साधनोमें विश्वास करते थे, तिलक एक अधिक स्वावलंबी साधन को अपनाना चाहते थे।उनका मानना था कि स्वतंत्रता किसी राष्ट्र के पास नहीं आती अपित उसे अनुपयुक्त हाथों से छीनना पड़ता हैं संवैधानिक साधनों की निष्फलता को अनुभव करते हुए उन्होंने जन जागरण और जन आंदोलन का मार्ग अपनाया।उन्होंने इतिहास से सीखा था की निरंकुश शासको को जनमत की शक्ति के समक्ष झुकना पड़ता है। अतः उन्होंने कांग्रेस को एक जन आंदोलन बनाने का प्रयास किया। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु उन्होंने साहित्य का सहारा लिया। तिलक एक सिद्धांत के रूप में अहिंसा में विश्वास नहीं करते थे, जैसा कि गांधी जी मानते हैं जैसा कि गांधी जी करते थे। वह भविष्य में सशस्त्र क्रांति की आवश्यकता को अस्वीकारनहीं करते थे।अतःउन्होंने क्रांतिकारियों को सदैव तैयार रहने की सलाह देते थे तिलक की इस संबंध में नीति व्यवहार प्रधानवयथार्थवादी थी।यद्यपि तिलक का प्रार्थना और याचिका की पद्धतिमें कोई विश्वास नहीं था।तब भी वह किन्हीं स्थितियों में इसकी आवश्यकता स्वीकार करते थे। वह अपने आप को किसी एक पद्धतिविशेष में बांधना नहीं चाहते थे।

सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण

तिलक ने भारतीय समाज के भीतर एकजुटता और जागरूकता लाने के लिए धार्मिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का उपयोग किया। गणेश उत्सव जैसे कार्यक्रमों का आयोजन कर उन्होंने भारतीयों को एकत्र किया और उन्हें अपने अधिकारों के प्रति जागरूक किया।तिलक के स्वराज का एक और महत्वपूर्ण पहलू आत्मनिर्भरता था। वे चाहते थे कि भारत विदेशी वस्त्रों, सामानों और उत्पादन पर निर्भर न रहे। इसके लिए उन्होंने स्वदेशी आंदोलन को बढ़ावा दिया और खादी को प्रोत्साहितकिया। तिलक ने यह भी महसूस किया कि स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए शिक्षा और जागरूकता जरूरी है। उन्होंने भारत में शिक्षा के प्रसार पर बल दिया और प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धतियों की पुनर्स्थापना की वकालत की।

स्वराज प्राप्त करने के साधन

तिलक के अनुसार स्वराज एक नैतिक कर्तव्य है और एक धर्म भी है उनके अनुसार स्वराज प्राप्तिके साधन भी स्वराज की धारणा के समान ही शाश्वत सत्य पर आधारित है।उनका मानना था की स्वराज दिया नहीं जाता, बल्कि प्राप्त किया जाता हैं।उनका कहना था की स्वराज किसी विदेशी सत्ता द्वारा किसी अधीन राज्य को नहीं दिया गया, जितने राष्ट्रों ने भी स्वराज प्राप्त किया है उन्होंने अपने प्रयत्नोंसे ही प्राप्त किया है। अपने धर्म इच्छा शक्ति केवल पर ही प्राप्त किया। याचिका की पद्धति को संघर्ष की पद्धतिमें बदलकर ही किसी राष्ट्र को आगे बढ़ने का अवसर मिल सकता है। यदि किसी राष्ट्र में संघर्ष करने की क्षमता नहीं है तो वह निश्चित ही अत्यंत पिछड़ा हुआ है।स्वराज के लिए तिलक क्रियात्मक उपाय को अपनानेपर बल देते हैं।उनके प्रमुख साधन निम्नवत हैं।

1. राष्ट्रीय शिक्षा

राष्ट्रीय शिक्षा तिलक के स्वराज प्राप्त का मुख्य अंग था। उन्होंने पुणे में न्यू इंग्लिश स्कूल व फर्ग्यूसन कॉलेज की स्थापना की।तत्कालीन शिक्षा आयोग के अध्यक्ष डब्ल्यू डब्ल्यू हंटर ने न्यू इंग्लिश स्कूल के प्रतिअपने विचार प्रकट करते हुए कहा था, कि समस्त भारत में मैं इस प्रकार की एक भी संस्था अभी तक नहीं देखी जिसकी इसके साथ तुलना की जा सके।इस संस्था को सरकार की तरफ से कोई सहायता नहीं मिलती हैं।तब भी यहनकेवल सरकारी हाई स्कूलों से प्रतिद्वंद्विता कर सकती है,अपितु अन्य देशों के स्कूलों से भी आगे बढ़ सकती है। तिलक ने शिक्षा के प्रसार के लिए 'डेक्कन एजुकेशनल सोसाइटी' की स्थापना की।

तिलक निम्न उद्देश्यों के कारण राष्ट्रीय शिक्षा को प्रभावपूर्ण बनाना चाहते थे :–

1. शिक्षा भारतीयों के द्वारा वह भारतीयों के लिए हो
2. जनता को सस्ती अंग्रेजी शिक्षा प्रदान करना
3. विद्यार्थियों को एक नवीन शिक्षा प्रणाली से प्रशिक्षित करना जिनके अंदर राष्ट्रीय भावना कूट–कूटकर भरी हो तथा जो स्वयंसेवक का कार्य सुगमतापूर्वक कर सकें। तिलक धर्मनिरपेक्ष शिक्षा को ही पूर्ण न मानकर धार्मिक व आदर्श शिक्षा के पक्षधर थे। वह मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम बनाना चाहते थे औरराजनीति की सफलता के लिए शिक्षा को आवश्यक मानते थे।

2. स्वदेशी आंदोलन

स्वदेशी का तात्पर्यश्देश में बनी हुई वस्तुओं का प्रयोग किया जानाश है। उन्होंने स्वदेशी शिक्षा, स्वदेशी विचार और स्वदेशी जीवन पद्धतिआदि सभी क्षेत्रों में इसका प्रयोग कियां तिलक ने स्वदेशी आंदोलन में विदेशी बहिष्कार भी जोड़ दिया। स्वदेशी वस्तुओं का प्रयोग किया जाए और विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया जाए यह नारा तिलक ने दिया। इसके साथ ही तिलक ने कहाकिहमें अपने धर्म संस्कृति, भाषा और सभ्यता को पश्चिम से श्रेष्ठ समझना चाहिए और संस्कृति को अधिक महत्व देना चाहिए। उदारवादी जहां पाश्चात्य भाषा व संस्कृति को अपनाने के पक्षधर थे, वही तिलक ने इसका घोर विरोध किया। तिलक बहिष्कार द्वारा ब्रिटिश शासन पर दबाव डालकर जनता की मांगे मनवाने के पक्ष के समर्थक थे।तिलक स्वदेशी को अपनाने व विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करने, विदेशी सभ्यता का बहिष्कार करने को एक सशक्त हथियार मानते थे। तिलक के विदेशी बहिष्कार को अपनाकरगांधी जी ने असहयोग आंदोलन चलाया।यहअसहयोग तिलक के बहिष्कार का ही एक परिष्कृत स्वरूप कहा जा सकता हैं।

तिलक की अवधारणा की प्रासंगिकता आज के राजनीतिक संदर्भ में

वर्तमानके भारत में तिलक की स्वराज की अवधारणाभारतीय राष्ट्रीयता और सांस्कृतिक पहचान के मुद्दों पर प्रासंगिक है। राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक विविधता के बीच संतुलन बनाए रखना तिलक की सोच की तरह महत्वपूर्ण है। भारतीय संस्कृति की रक्षा और उसका पुनर्निर्माण अब भी कई राजनीतिक और सामाजिक आंदोलनों का हिस्सा है।तिलक ने स्वदेशी उत्पादों को अपनाने और ब्रिटिश शासन के खिलाफ स्वदेशी आंदोलन को प्रोत्साहित किया। उन्होंने भारतीय उद्योगों और उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए कई अभियान चलाए। आज के भारत में, जहाँ 'आत्मनिर्भर भारत' की संकल्पना को प्रमुखता दी जा रही है, तिलक के विचारों की प्रासंगिकता अत्यधिक है। उनकी विचारधारा हमें प्रेरित कर सकती है कि हम अपनी स्वदेशी क्षमताओं को पहचानें और उनका पूर्ण उपयोग करें। इस प्रकार, आर्थिक राष्ट्रवाद के पुनरुद्धार में तिलक की दृष्टि को शामिल किया जा सकता है, जिससे भारत न केवल आर्थिक रूप से सशक्त होगा बल्कि देशवासियों की आत्म–निर्भरता भी बढ़ेगा।

तिलक ने कांग्रेस की स्थानीय बैठकों में मातृभाषा के उपयोग की वकालत की थी, क्योंकि उन्हें विश्वास था कि मातृभाषा के माध्यम से आम लोगों तक सन्देश और विचार पहुँचाना अधिक प्रभावी होगा। हाल ही में भारत सरकार ने 'नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति' (2020) के माध्यम से संस्कृत और स्थानीय और मातृ भाषाओं को अपनाने पर जोर दिया है। इस नीति के तहत, भारतीय भाषाओं को शिक्षा और प्रशासन में अधिक महत्व दिया जा रहा है। तिलक की यह दृष्टि कि मातृभाषा का प्रयोग लोगों के साथ सच्चा संवाद स्थापित करने के लिए आवश्यक है, आज भी प्रासंगिक है और वर्तमान में भारत सरकार द्वारा **'नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति' (2020)** नीति के माध्यम से इसे साकार किया जा रहा है।

तिलक जातिवाद और अस्पृश्यता के कट्टर विरोधी थे। उन्होंने समाज में जातियों और संप्रदायों के बीच विभाजन को समाप्त करने के लिए व्यापक आंदोलन चलाया। उनके समय में समाज में जातिगत भेदभाव और अस्पृश्यता के खिलाफ लड़ाई ने महत्वपूर्ण सामाजिक बदलावों की नींव रखी। आज भी भारतीय समाज में जातिवाद और सामाजिक असमानताएँ एक चुनौती बनी हुई हैं। तिलक के दृष्टिकोण की इस संदर्भ में प्रासंगिकता है कि हमें समाज के विभिन्न वर्गों को एकजुट करने और समानता की दिशा में काम करना चाहिए। उनके विचार हमें यह याद दिलाते हैं कि सामाजिक समरसता और एकता के लिए लगातार प्रयास करना अत्यंत आवश्यक हैं।

तिलक का आत्मनिर्भरता का विचार आज के 'आत्मनिर्भर भारत' की नीति में गहराई से झलकता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा प्रोत्साहित किया गया 'आत्मनिर्भर भारत' अभियान तिलक के स्वराज के विचारों से प्रेरित प्रतीत होता है, जिसमें भारत को अपनी अर्थव्यवस्था और उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाने की बात की जाती है।

तिलक ने जो लोकतांत्रिक मूल्यों की वकालत की थी, वे आज भी भारत के संविधान और लोकतांत्रिक प्रक्रिया में महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने भारतीयों को यह सिखाया कि उनका अधिकार है कि वे अपने राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक फैसलों में भाग लें। यह विचार आज भी भारत में चुनावी प्रक्रिया, नागरिक अधिकारों और सशक्त लोकतंत्र के रूप में जीवित है।

तिलक का शिक्षा पर जोर आज भी प्रासंगिक है, क्योंकि भारत में शिक्षा की कमी और असमानता एक बड़ी चुनौती है। उनकी यह अवधारणा कि स्वराज तभी संभव है जब लोग शिक्षित हों आज भी हमारे शिक्षा और सामाजिक सशक्तिकरण कार्यक्रमों में समाहित है।

उनका संदेश निम्न शब्दों में वर्णित है 'एक पराधीन राष्ट्र के समक्ष स्वयं को स्वाधीन करने हेतु संघर्ष करने की अतिरिक्त और कोई मार्ग नहीं है' क्योंकि स्वतंत्रता ही सामाजिक सांस्कृतिक और भौतिक स्वतंत्रता के द्वार खोलती है धीरे–धीरे प्रगति के द्वारा कोई राष्ट्र स्वतंत्रता के लिए तैयार नहीं होता,स्वतंत्रता तीव्र मार्ग के लिए मार्ग प्रशस्त करती देशभक्ति सुंदर व्याख्यान देने में नहींअपितुमातृभूमि के लिए सर्वस्व बलिदान कर देने के लिए तत्पर रहने मेंहै।तिलक कायहसंदेश आज भी उतना ही सत्य है जितना तत्कालीन समय में था।

निष्कर्ष

लोकमान्य तिलक आधुनिक भारत के महानतम निर्माता,औरकेवल महाराष्ट्र की नहीं अभी संपूर्ण भारत के बिना मुकुट के राजा थे। वह एक धर्म प्रधान नहीं अपितु धर्म, देशभक्ति और बलिदान के धर्मगुरु थे। देशभक्ति उनका धर्म था और भारत माता की इष्ट देवी थी।लोकमान्य तिलक की स्वराज की अवधारणा भारतीय राजनीति और समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उनका विचार केवल राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं था, बल्कि यह एक समग्र दृष्टिकोण था, जिसमें समाज, संस्कृति, शिक्षा और आत्मनिर्भरता के तत्व जुड़े हुए थे। आज भी उनके विचार भारतीय राजनीति और समाज के विकास के लिए प्रेरणास्त्रोत हैं।

लोकमान्य बालगंगाधर तिलक के भारतीय समाज और राजनीति में कई महत्वपूर्ण विचार विशेष रूप से स्वदेशी आंदोलन, मातृभाषा के महत्व और जातिवाद के खिलाफ उनके दृष्टिकोण आज भी हमारे समाज को मार्गदर्शन प्रदान कर सकते हैं।

लोकमान्य बालगंगाधर तिलक का जीवन और कार्य भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रति उनके दृढ़ समर्पण और राष्ट्रीयता की गहरी भावना को दर्शाता है। तिलक के विचारों और कार्यों द्वारा राष्ट्रीय पुनर्जागरण व राष्ट्रीय आंदोलन को एक नवीन मार्ग नवीन ऊर्जा, नवीन चेतना का संरक्षण प्राप्त हुआ उन्होंने कांग्रेस को अभिजात वर्ग के दल से जनसाधारण का दल बनाने तथा एवं कांग्रेस की याचना पद्धति और प्रार्थना वाली आंदोलन को उग्रवादी, निर्भीक, व जनआंदोलन बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।स्वराज के सैद्धांतिक विचार को उन्होंनेसनातन धर्म से संयुक्त कर जनप्रियबनाया और लोगों के मध्य प्रसिद्धि प्राप्त की। तिलक के वैचारिक कार्यक्रम स्वराज, स्वदेशी,बहिष्कार, राष्ट्रीय शिक्षा द्वारा ब्रिटिश सरकार को कम्पितकिया।देश को अवज्ञा का दर्शन प्रदान कर गांधी जी के आगामी

आंदोलन के लिए धरातल तैयार किया।निष्क्रिय प्रतिरोध को उन्होंने संवैधानिक आंदोलन का स्वरूप दिया। तिलक भारत में आधुनिक लोकतंत्र के प्रणेता है, उन्होंने स्वयं को किसी आदर्शवादी दर्शन तक सीमित नहीं रखा,अपितुअपने दर्शन में यथार्थवाद वप्रायोगिकविचारों को अपनाया। तिलककोआधुनिक भारत के राष्ट्र निर्माता कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी इस प्रकार, तिलक के विचार आज भी भारतीय समाज और राजनीति में अत्यधिक प्रासंगिक हैं। उनकी दृष्टि हमें यह सिखाती है कि स्वदेशी उत्पादों को अपनाना, मातृभाषा का सम्मान करना और जातिवाद के खिलाफ संघर्ष करना, भारतीय समाज की प्रगति और एकता के लिए अत्यंत आवश्यक है। इन विचारों को अपनाकर हम एक समृद्ध और सशक्त भारत बनानेकीदिशा में आगे बढ़ सकते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. देसाई, ए.आर., भारतीय राष्ट्रवाद की सामाजिक पृष्ठभूमि, मैकमिलन इंडिया, नई दिल्ली,
2. ग्रोवर बी. एल, यशपाल, आधुनिक भारत का इतिहासः एक नवीन मूल्यांकन, एस. चन्द एण्ड कम्पनी नई दिल्ली
3. वर्मा, वी. पी., आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, आगरा
4. वर्मा, दीनानाथ– आधुनिक भारत का इतिहास, ज्ञानदा प्रकाशन, नई दिल्ली,
5. नागर,पुरूषोत्तम, आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर
6. गाबा, ओ. पी., भारतीय राजनीतिक विचारक, मयूर पेपर बैक्स
7. सूद, ज्योति प्रसाद–भारतीय राजनीतिक विचारक, के नाथ एंड कंपनी, मेरठ
8. कर्वे, डी. डी., द डेक्कन एजुकेशन सोसाइटी, द जर्नल ऑफ एशियन स्टडीज